अन्धविश्वास से लाभ कुछ नहीं हानि अपार हैं

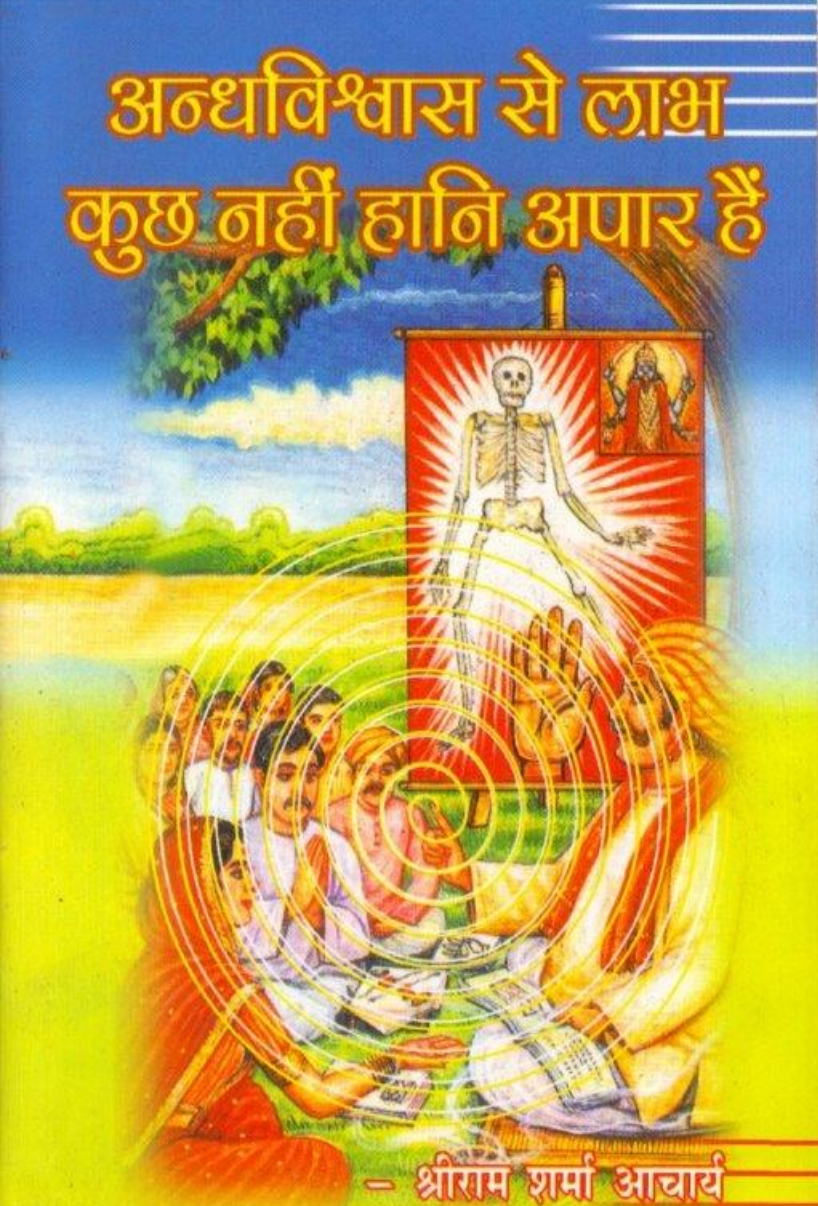

– श्रीराम शर्मा आचार्य

अन्धविश्वास से लाभ कुछ नहीं हानि अपार है

मनुष्य की कृतियों में अनेक दूषण हो सकते हैं, परमात्मा की कृतियों में नहीं । भगवान् ने जो कुछ बनाया है, सुन्दर एवं शुभ है । मनुष्य के सम्पर्क में आने से कई बार प्रभु की अच्छी कृतियाँ भी दोष–युक्त बन जाती हैं । उनके दोष–दुर्गुण ही उत्तमता को निकृष्टता में बदल देते हैं । परमात्मा दोष–दुर्गुणों से रहित है, इसलिए उसकी कृतियाँ भी एक से एक अद्भुत, सुन्दर एवं शुभ हैं । उनमें दोष ढूँढ़ना, मनुष्य की अपनी बुद्धि–विकृति का भौंड़ा प्रदर्शन मात्र ही कहा जायगा ।

मनुष्य जिन चीजों को बनाता है वे अल्पजीवी और दोषपूर्ण रहती हैं । वे समय के प्रभाव से अथवा प्राणियों के सम्पर्क से बिगड़ती और दूषित होती रहती हैं । पीछे उनमें सुधार भी होता रहता है, पर जो कुछ ईश्वर कृत है, उसका बाह्य कलेवर भले ही प्रकृति–नियमों के अनुसार बदलता रहे, मूल स्वरूप में कोई हेर–फेर नहीं होता । स्वरूपवान् वस्तुओं में तो यह संसर्ग दोष आता भी है, पर जो सूक्ष्म और सनातन तथ्य हैं, उनमें इस प्रकार की विकृतियों की भी गुञ्जायश नहीं है । सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, समुद्र, मेघ, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश जैसे तत्व सृष्टि के आदि से ही एक रस हैं । दिन–रात, मास, पक्ष, ऋतु आदि के स्वरूप में जो भिन्नता है, उससे हमारी सुविधा–असुविधा में अन्तर पड़ सकता है, पर उनकी पवित्रता में कोई अन्तर नहीं ।

हर दिन शुभ दिन–हर दिन ईश्वर का बनाया हुआ है, इसलिए प्रत्येक दिन ही एक से एक बढ़कर सुन्दर और पवित्र है । ईश्वर महान् हैं इसलिए उसकी कृतियाँ भी महान हैं । उसकी कृतियों में दोष निकालना, एक प्रकार से ईश्वर को ही अपवित्र और दोषी ठहराने के समान है । जो इस प्रकार के छिद्रान्वेषण में लगे रहते हैं कि अमुक दिन, अमुक ऋतु, अमुक तिथि शुभ है, वे न तो ईश्वर को जानते हैं और न उनकी महिमा को । वे अपनी भ्रान्ति और दोष–दृष्टि का

आरोपण ईश्वर की कृतियों पर करके उन्हें दोषी तो नहीं बना सकते हैं, अपनी क्षुद्रता का परिचय अवश्य दे सकते हैं ।

कौन–सा दिन शुभ और कौन–सा दिन अशुभ है–यह विचार करते हुए हम एक प्रकार से ईश्वर की महानता पर और उसकी महान् कृतियों पर लांछन लगाने का ही दुस्साहस करते हैं । हमें जानना चाहिए कि हर दिन पवित्र है । शुभ कर्मों के लिए हर दिन शुभ है और अशुभ कामों के लिए हर दिन अशुभ । शास्त्रों ने कहा है कि जब तेरी इच्छा दान देने की हो तो बाँए हाथ में जो है उसे दाँयि हाथ लाने में विलम्ब न करे । कौन जाने इतनी देर में आसुरी प्रवृत्तियाँ उभर आयें और सत्कर्म करने का विचार बदल जाये । शुभ विचारों को सत्कर्मों में परिणत करने के लिए कहा गया है और बताया गया है कि मृत्यु ने एक हाथ में हमारे बालों को पकड़ा हुआ है और दूसरे में तलवार तनी हुई है, न जाने उसका वार कब हो जाय और न जाने कौन–सा शुभ मनोरथ अधूरा पड़ा रह जाय । इसलिए शुभ प्रयोजन में तनिक भी देर न करनी चाहिए ।

कौन–सा दिन अच्छा है, कौन दिन बुरा ऐसा विचार अशुभ कर्मों के लिए करना चाहिए । इसी बहाने आज की घड़ी टल जाय तो जो उफान–आवेश दुष्कर्मों के लिए उठ रहा है, सम्भव है किसी प्रकार शिथिल ही हो जाय और टल ही जाय । यदि ऐसा हो सका तो यह समय टालने वाली बात अपने लिए कल्याण कारक ही सिद्ध होगी । चोरी, हत्या, लूट, अपहरण, व्यभिचार, छल, जुआ, मद्यपान आदि दुष्ट–कर्म करने के लिए मन की नीच वृत्तियाँ बहुत प्रबल हो रही हों और वे काबू में न आ रही हों, तो उसका एक उपाय यह भी है कि कोई शुभ मुहूर्त ढूँढ़ा जाय । फलित ज्योतिष के हिसाब से हर दिन में कोई न कोई दोष जरूर होता है । तिथि, बार, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्रमा, भद्रा, भरणी आदि के इतने अधिक जंजाल है कि हर दिन को किसी न किसी आधार पर दोष–युक्त सिद्ध किया जा सकता है । पूर्ण शुद्ध तो कदाचित् ही वर्ष में एकाध दिन निकले । ऐसी दशा में उस अशुभ घड़ी को शुभ–मुहूर्त की प्रतीक्षा में चिरकाल तक टाला जा सकता है ।

किन्तु यह बात शुभ–कर्मों के सम्बन्ध में लागू नहीं होती । उनमें विलम्ब किया जायगा तो जो उत्साह आज है, कल ठण्डा हो सकता है, जो परिस्थिति आज है, वह कल बदल सकती है । ऐसी दशा में जो आज हो सकता है, वह कल के लिए टाला जाय तो सम्भव है वह 'कल भी न आवे ।' इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए मनीषियों और तत्व–दर्शियों का सदा से यह मत रहा है कि शुभ–कर्म के लिए हर दिन शुभ है और हर घड़ी अमृतमय है ।

मुहूर्तवाद का जंजाल–जिन दिनों मुहूर्तवाद का जंजाल अपने पूर्ण यौवन की दशा में था और लोग बिना मुहूर्त देखे टट्टी भी नहीं फिरना चाहते थे, उन दिनों भी विचारशील लोग इस प्रयत्न में थे कि इस अकारण की भ्रान्ति से हानि उठाने वाली जनता को किसी प्रकार बचाया जाय । तब उन्होंने हर दिन की, हर रात की कोई 'चौघड़िया' की एक पद्धति फलित ज्योतिष के अन्तर्गत ही निकाल दी थी और उससे मुहूर्तवाद का विष ९० प्रतिशत दमन हो गया था । मुहूर्तवाद की रक्षा भी हो गई, इसका खण्डन भी न करना पड़ा और लोग उस आधार पर शुभ–कर्मों के उत्साह शिथिल होने की आशंका से भी बच गये । चौघड़िया उस गणना को कहते हैं जिसके अनुसार हर दिन और हर रात को चार–चार घड़ी के अन्तर से शुभ–अशुभ योग आते–जाते हैं । जिस दिन भी कोई काम करना है, उस दिन की अशुभ घड़ियों को बचाकर शुभ घड़ियों में कोई भी अच्छा काम किया जा सकता है । चार घड़ी का अर्थ है लगभग डेढ़ घण्टा, आगे–पीछे काम कर लिया जाय तो उससे कुछ बनता–बिगड़ता नहीं है । मुहूर्त वाली बात भी रह गई और समय टालने पर शुभ–कर्म के टालने की आशंका का भी कोई कारण न रह गया । यह मध्यवर्ती मार्ग किसी बुद्धिमान विचारशील और दूरदर्शी पण्डित की सूझ–बूझ है । सम्भव है, इस सुधारवादी प्रक्रिया के प्रचलन करने वाले को मुहूर्तवाद के आधार पर उपयोगी कार्यों में अनावश्यक विलम्ब होने के कारण उत्पन्न होने वाले दुष्परिणामों के अनुभव हुए होंगे और उसने उस भ्रान्ति का आमूल खण्डन करने की अपेक्षा यह सुधारवादी मध्यमार्ग निकाल दिया होगा । चौघड़िया विधान

के आधार पर कोई व्यक्ति कोई भी शुभ–कार्य किसी भी दिन कर सकता है । केवल मुहूर्त की रक्षा करने के लिए एक–दो घण्टे मात्र का आगा–पीछा करना पड़ेगा, क्योंकि अशुभ घड़ी तो डेढ़ घण्टे–मात्र रहती है, इसके बाद शुभ का परिवर्तन हो जाता है ।

तथ्यों को आँख से ओझल न करें–नैपोलियन बोनापार्ट का सेनापति पाँच मिनट लेट पहुँचा । इस छोटे से विलम्ब से जीत–हार के रूप में परिणत हो गई और नेपोलियन कैद कर लिया गया । यों पाँच मिनट का कोई मूल्य नहीं, पर कितने ही अवसर ऐसे होते हैं, जो मुहूर्त के नाम पर या किसी भी आधार पर यदि चुका दिये जायें तो उसका परिणाम सदा हाथ मलमल कर पछताते रहना ही होता है ।

महमूद गजनवी ने सोमनाथ मन्दिर पर चढ़ाई की । गजनवी की फौज की अपेक्षा राजपूतों की सेना कहीं अधिक बड़ी और कहीं अधिक साधन सम्पन्न थी । पर जब आक्रमण हुआ तो पण्डितों ने बताया कि अभी प्रत्याक्रमण करने का मुहूर्त नहीं है । इस समय लड़ेंगे तो हार जायेंगे इसलिए अभी इतने समय और ठहरना चाहिए । उन दिनों भला ज्योतिषी की बात कौन टाल सकता था । राजपूतों को चुप बैठना पड़ा । फलस्वरूप गजनवी का आक्रमण सफल हुआ, उसने शिव–प्रतिमा के टुकड़े–टुकड़े कर दिये प्रचुर सम्पत्ति लूट ले गया और हजारों नर–नारी कैद कर लिए जिन्हें गजनी के बाजार में गुलाम बनाकर एक–एक रुपये में बेच दिया । मुहूर्तवाद के अभिशाप ने भारतीय इतिहास में एक कलंक का पृष्ठ जोड़ दिया ।

बख्तियार खिलजी ने बंगाल पर चढ़ाई की, वहाँ का राजा ज्योतिषियों का अन्ध–भक्त था । बिना पूछे वह पत्ता भी नहीं तोड़ता था । यह जानकारी खिलजी को मिल गई । उसने राज्य ज्योतिषियों को गहरी रिश्वत देकर अपने पक्ष में मिला लिया । उनने कह दिया अभी लड़ने का मुहूर्त नहीं, लड़ेंगे तो हार जायेंगे । राजा कोई और उपाय न देखकर राज्य छोड़कर चुपचाप भाग गया और बख्तियार खिलजी, बिना लड़ाई किए ही बंगाल का राजा बन गया ।

बाबर ने भारत पर आक्रमण किया । लड़ाई आरम्भ हो गई ।

इसी अवसर पर एक ज्योतिषी ने बाबर से कहा–अभी आप कुछ दिन ठहरें, अभी ग्रह गणित आपके प्रतिकूल है । अमुक दिन अच्छा मुहूर्त है, तब आप लड़ेंगे तो विजय होगी । बाबर ने इस बात को तो टाल दिया और दूसरा प्रश्न पूछा–आप तो ज्योतिष के आधार पर अनेक बातें बता सकते होंगे । उसने कहा–हाँ ! बाबर ने अपने सेनापतियों और मन्त्रियों को बुलाकर कहा–यदि मेरी तलवार से इसका सिर न कटे तो ज्योतिषी की बात सच्ची माननी चाहिए और लड़ाई रोक देनी चाहिए, पर यदि इसका सिर कट जाय तो समझना चाहिए कि ज्योतिष झूठ है और फिर भविष्य में किसी भविष्यवक्ता की बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए । बाबर ने तलवार के एक ही झटके में ज्योतिषी का सिर उड़ा दिया और अपने साथियों से कहा–जो अपनी आयु ३७ वर्ष बाकी बताता था किन्तु एक घण्टे भी जीवित न रह सका, उस भविष्यवक्ता की बात पर विश्वास करना मूर्खता नहीं तो और क्या है ? बाबर ने लड़ाई जारी रखी और अन्ततः वह जीत भी गया ।

यह ऐतिहासिक घटनायें बताती हैं कि शुभ–अशुभ दिनों के जंजाल, उलझन में न तो कोई बुद्धिमत्ता है और न तथ्य । ईश्वर विनिर्मित दिनों में से किसी को शुभ किसी को अशुभ बताना ईश्वर की मूर्खता का प्रतिपादन करने की उपहासास्पद चेष्टा करना मात्र है । जो ऐसा विश्वास करते हैं वे पाते कुछ नहीं खोते बहुत हैं ।

केवल असुविधा केवल परेशानी–आजकल उत्तर भारत में विवाह–शादियाँ कुछ नियत मुहूर्त में ही होती हैं । जनसंख्या विशेषतया शहरों की आबादी बढ़ जाने से एक दिन में कई–कई हजार शादियाँ होती हैं । फलस्वरूप उन दिनों रेलें, मोटरों, ताँगे, रिक्शों में इतनी भीड़ें होती हैं कि जगह मिलना मुश्किल हो जाता है । बाजार में खाद्य पदार्थों के दाम दूने हो जाते हैं । हलवाई ढूँढ़े नहीं मिलते । धर्मशाला, होटल भरे रहते हैं । बाजे, गैस–बत्ती आदि चीजें ढूँढ़े नहीं मिलते, यहाँ तक कि विवाह पढ़ने वाले पण्डितों तक का अकाल पड़ जाता है । इस अन्धा–धुन्ध भीड़–भाड़ में हर किसी को असुविधा होती है । यदि अन्य दिनों में सुविधानुसार विवाह होते रहें तो सब काम सस्ता होता रहे

और जो भगदड़ अब मचती है, उसका कोई कारण न रहे ।

पंजाब में सिख नहीं, सनातनी हिन्दू भी उन महीनों में प्रसन्नता पूर्वक विवाह करते हैं, जिनमें सालगों के मुहूर्त नहीं होते । दक्षिण भारत में भी उत्तर भारत जैसी मुहूर्त मान्यता नहीं है । बंगाल, आसाम के प्रान्तों में उत्तर प्रदेश जैसी परिपाटी नहीं है । हिन्दू धर्म में ही अनेक मान्यताऐं प्रचलित हैं और वे विवाहों के मुहूर्त सम्बन्धी विश्वासों की दृष्टि से परस्पर सर्वथा भिन्न हैं । ऐसी दशा में उस वहम का कोई आधार नहीं रह जाता, जिसके अनुसार यह कहा जाता है कि बिना मुहूर्त विवाह करने से लड़की या लड़का मर जाता है अथवा परिणाम बुरा होता है । यदि यह वहम ठीक रहा होता तो सिख, जैन, पंजाबी, बंगाली, मद्रासी, आसामी, सनातनी, हिन्दुओं के सब विवाहों के ऐसे ही दुष्परिणाम हुए होते । जो लोग निर्धारित सालगों पर ही विवाह करते हैं क्या उनमें से कोई विधवा या विधुर नहीं होते ? क्या वे सभी विवाह सफल कहे जाने योग्य होते हैं ? यदि नहीं तो उन मुहूर्तों की फिर क्या उपयोगिता रह गई ?

जो तथ्य वास्तविक होते हैं वे किसी प्रदेश या सम्प्रदाय पर ही लागू नहीं होते वरन् सभी देशों और सभी जातियों पर समान रूप से लागू होते हैं । मध्यभारत के हिन्दुओं की मान्यताओं के प्रतिकूल संसार के सभी देशों और जातियों में ऐसे दिनों में विवाह होते हैं जिनमें शादी करना अशुभ माना जाता है । ऐसी दशा में उन सब के विवाहों को असफल ही होना चाहिए था, पर ऐसा होता कहाँ है ? इसलिए इस सम्बन्ध में विस्तृत दृष्टिकोण से विचार करने पर यही मानना पड़ता है कि यह दिनों के शुभ–अशुभ होने की मान्यता चन्द लोगों का अपना विश्वास भर है, उसके पीछे न कोई आधार है न कोई तथ्य । संसार के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार के रीति–रिवाज, प्रथा–प्रचलन और वहम–विश्वास प्रचलित हैं, उसी प्रकार अपने लोगों में यह मुहूर्तवाद की मान्यता जड़ जमा कर बैठ गई है ।

खण्डन और समाधान–"मुहूर्त दोष परिहार" नामक एक पुस्तक सहपऊ (जिला–मथुरा) निवासी पं. आनन्दीलाल शर्मा ज्योतिषाचार्य ने

छापी । उसमें उन्होंने विवाह अभी बनता है, अभी नहीं बनता, जैसे अड़ंगों में से लगभग हर एक को काट कर रख दिया है । प्रतिपादन उन्होंने ज्योतिष ग्रन्थों के आधार पर ही किया है । कोई दोष किसी जाति पर किसी देश पर लागू होता है किसी पर नहीं, ऐसे अनेक प्रमाण इस पुस्तक में भरे पड़े हैं । उस आधार पर सिद्ध किया जा सकता है कि जो हम मध्य भारत के थोड़े से लोग विवाहों की प्रचलित मुहूर्त मान्यता पर विश्वास करते हैं उनके लिए भी ८० प्रतिशत बच निकलने की गुञ्जायश है । फिर यदि कन्या १२ वर्ष से ऊपर आयु की है, उसे मासिक धर्म होने लगा है, तो शीघ्रबोधकार की स्पष्ट घोषणा है कि उसका विवाह अच्छी घड़ी–मुहूर्त देखकर कर देना चाहिए और किसी दिन, मास, गुरु, सूर्य, चन्द्र की पूजा या चौथे, आठवें, बारहवें होने की अगुणता के झंझट में नहीं पड़ना चाहिए । आजकल आमतौर से सयानी कन्याओं के विवाह होते हैं । बाल–विवाह निषेध कानून के अनुसार १८ वर्ष से कम आयु की कन्या का विवाह हो भी नहीं सकता । ऐसी दशा में हर हिन्दू–विवाह स्वभावतः सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है ।

यह बात भुक्त भोगी ही जानते हैं कि जब विवाह की सब बात पक्की हो चुकी है, दोनों पक्ष बिल्कुल तैयार हैं और उन्हें सुविधा भी है, तब भी मुहूर्त के नाम पर कई–कई वर्षों के लिए विवाह टाले जाते हैं, तो उससे कितनी असुविधा होती है । कई बार ऐसे समय में विवाह करने पड़ते हैं, जब ऋतु सर्वथा प्रतिकूल एवं असुविधा जनक होती है । होने को तो यों सभी कुछ होता है, काम तो किसी प्रकार चलता ही है, पर असुविधा इतनी रहती है कि आनन्द के स्थान पर क्षोभ और उद्वेग ही हाथ रह जाता है ।

इसी प्रकार कई बार लड़के–लड़की का जोड़ा हर दृष्टि से उपयुक्त होता है, दोनों ओर के सम्बन्धी आपस में सन्तुष्ट और प्रसन्न हैं किन्तु विधि वर्ग न मिलने से ऐसा अड़ंगा निकल आता है कि इस आधार पर वह विचार छोड़ देना पड़ता है और उस अभाव की पूर्ति फिर कभी भी नहीं हो पाती । कई बार अच्छा विधि वर्ग मिलने की बात को प्रधानता देने से ऐसे फूहड़ जोड़े भिड़ जाते हैं, जिनमें आजीवन

असन्तोष और कलह छाया रहता है । जो बातें देखने, तलाश करने और मिलाने की हैं, उन्हें लोग मिलाते नहीं और जन्म कुण्डलियाँ इधर से उधर घुमाते रहते हैं । कोई पण्डित क्या कह देता है और कोई क्या । इस भ्रम जंजाल में पड़े हुए लोग बहुत–सा समय और श्रम गँवाते रहते हैं । जहाँ विवाह अच्छा रहता है वहाँ से छोड़ देते हैं और जहाँ कुछ भी अच्छाई नहीं है वहाँ 'विधि वर्ग' की मान्यता के आधार पर स्वीकार कर लेते हैं । अविवेकपूर्ण किए गये निर्णयों के आधार पर जो परिणाम निकलने चाहिए वही लोगों को भुगतने भी पड़ते हैं ।

निर्दोषों पर दोषारोपण–कई लड़कों और लड़कियों को 'मंगली' घोषित कर दिया जाता है । उनके लिए 'मंगली' ही साथी चाहिए । इस अड़ंगे में कितनी ही कन्यायें बहुत बड़ी हो जाती हैं । उनकी आयु के लड़के नहीं मिल पाते, उन बेचारियों की जिन्दगी ही एक प्रकार से बेकार हो जाती है । उसी प्रकार कई लड़के 'मंगली' होते हैं, उन्हें 'मंगली' लड़की न मिली तो देर तक अविवाहित बने रहते हैं, फिर कभी विवाह हुआ भी तो भागे भूत की चोटी उतारने की तरह ज्यों–त्यों कुँवारपन उतारना पड़ता है और अनुपयुक्त साथी से पल्ला बँध जाता है । उपर्युक्त जोड़ी ढूँढ़ने में यह मंगली होने की मान्यता कितनी भारी अड़चन उत्पन्न करती है, इसके हमने कितने ही दुःखान्त उदाहरण देखे हैं । उन घटनाओं का वर्णन यदि किया जाय तो हर सहृदय और विवेकशील व्यक्ति यही कहेगा कि इन व्यर्थ के भ्रम–जंजालों से हिन्दू समाज को जितनी जल्दी छुड़ाया जा सके उतना ही उत्तम है ।

अमुक घड़ी में, अमुक दिन उत्पन्न हुआ बालक अशुभ होता है–इस मान्यता ने अनेक बच्चों को आजीवन उपेक्षित एवं तिरस्कृत रहने के लिए विवश कर दिया । अट्ठाईस नक्षत्रों में से छः नक्षत्र 'मूल' माने जाते हैं । मूलों में उत्पन्न हुए बच्चे माता–पिता, भाई–बहिन, मामा आदि के लिए अशुभ माने जाते हैं, उन्हें धन हानि तथा रोग–शोक उत्पन्न करने वाला भी कहा जाता है । ऐसे बच्चे जब उत्पन्न होते हैं तब अभिभावकों का दिल धड़कने लगता है । घर में शिशु–जन्म की खुशी होना तो दूर सब अशुभ–अनिष्ट की आशंका से ग्रसित रहने

लगते हैं । कन्या हुई तो उसके मरने की मनौती मनाई जाती है । लड़का हुआ तो मूल शान्ति का खटराग रोपा जाता है । हजार–दो हजार रुपये इसी जंजाल में देखते–देखते खर्च हो जाते हैं । फिर भी वह आशंका दूर नहीं होती है ।

सत्ताईस नक्षत्रों में छः मूल होने के कारण लगभग २२ प्रतिशत बच्चे मूलों में उत्पन्न होते हैं और वे सब माँ–बाप के लिए प्रसन्नता की अपेक्षा आशंका का कारण बनें, यह कितनी बुरी बात है । ऐसे बच्चों को न तो पूरा–पूरा प्यार ही माँ–बाप का मिलता है और न पालन–पोषण ही । वे सहज स्नेह, कर्तव्य और लोक–लज्जा से उन्हें पालते तो हैं, पर मन ही मन अशुभ, अनिष्ट का प्रतीक समझकर घृणा और भय भी करते रहते हैं । बच्चे और उनके अभिभावकों के बीच ऐसी दीवार खड़ी कर देने वाली मान्यता ने किसी का क्या हित साधन किया ? यदि उसमें कुछ भी वास्तविकता होती तो भी यह कहा जाता कि सत्य के लिए मानना पड़ता है । सचाई यह है कि हर दिन और हर नक्षत्र शुभ हैं । किसी दिन न किसी का जन्म शुभ है न अशुभ । प्रयत्न और कर्तव्य से हर व्यक्ति अच्छा हो सकता है और बुरा । यह मिथ्या अन्ध–विश्वास अकारण ही असंख्य लोगों के लिए भय, त्रास, उद्वेग, आशंका का कारण बना हुआ है और अगणित दुष्परिणाम उत्पन्न करता रहता है ।

कानपुर की सब्जी मण्डी निवासी एक ५९ वर्षीय महिला ने अपनी एक साल की लड़की को सरसैय्या घाट पर गंगा के गहरे जल में फेंक दिया । किन्तु मल्लाहों ने तैरकर उसे बचा लिया । उक्त महिला ने बताया कि उससे ज्योतिषियों ने कहा है कि वह अशुभ घड़ी में पैदा हुई है । इसके कारण माता–पिता तथा घर वालों को अनेक कष्ट सहने पड़ेंगे । उन कष्टों से बचने के लिए ही उसने बच्ची से पीछा छुड़ाने के लिए ऐसा कृत्य किया । अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद बच्ची को उसकी माँ के साथ जेल भेज दिया गया ।

मेरठ के एक युवक ने अपनी नव–विवाहिता स्त्री को चारपाई से बाँध कर उस पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी । कहते हैं

कि मरने से पहले उस जली हुई स्त्री ने पास पहुँचने वालों का बताया कि उसके पति ने उसे जलाया है । युवक का विवाह एक वर्ष पूर्व ही हुआ था, तब से वह बीमार-सा चला आ रहा था । ज्योतिषियों ने उससे कहा था कि तुम्हारी स्त्री 'मंगली' है । उस से तुम बीमार रहते हो । युवक ने इस पर विश्वास करके पत्नी को क्रूरता पूर्वक जला डाला ।

ये घटनाऐं वे हैं जो पिछले ही दिनों पत्रों में प्रकाशित हुई हैं । ऐसे अनेक काण्ड समाचार पत्रों में छपते रहते हैं । जो नहीं छप पाते उनकी संख्या कम नहीं है । ऐसी महिलाओं की संख्या तो बहुत बड़ी है जिन्हें केवल इसलिए तिरस्कृत जीवन यापन करना पड़ रहा है कि वे तथाकथित अशुभ घड़ी में जन्मीं हैं और उनके कारण घर वालों पर कोई न कोई दैवी विपत्ति आती रहती है । घर वालों में इतना साहस तो नहीं कि उन्हें मार डालें पर उनके मरने की मनौती जरूर मनाते रहते हैं । ऐसे घृणित वातावरण में जिन नारियों को नारकीय जीवन, मौत से भी बदतर जीवन जीना पड़ रहा है, उसका पाप हत्यारी अन्ध-मान्यताओं के सिर पर ही है जिनके कारण व्यर्थ ही किसी को शुभ किसी को अशुभ घोषित कर दिया जाता है ।

भविष्य की जानकारी केवल ईश्वर को-कल किसका क्या होने वाला है, यह रहस्य ईश्वर ने केवल अपने हाथ में छिपाकर रखा है । मनुष्य को वह विदित नहीं । यदि विदित रहा होता तो भविष्य वक्ता लोग अपने बारे में कुछ अवश्य ही जान लेते और मुसीबतों से बचने का या प्राप्त सुखों के बारे में निश्चिन्त अवश्य ही रहते । पर देखा गया है कि वे भी अपने तथा अपने सम्बन्धियों के बारे में उतने ही चिन्तित एवं अनिश्चित रहते हैं जैसे दूसरे लोग । सचाई यह है कि अन्धेरे में टटोलने और कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा जोड़ने के अतिरिक्त और कुछ भी इन लोगों के हाथ में नहीं होता ।

तेजी-मन्दी का धन्धा कितने ही भविष्य-वक्ता करते हैं । यदि किसी को वस्तुतः ऐसा ज्ञान हो तो वह व्यक्ति एक-दो महीने के भीतर संसार की समस्त सम्पत्ति का स्वामी बन सकता है । सट्टे का व्यापार हर जगह होता है । जिस मन्दी-तेजी में अपना लाभ होता है, उसी का

दाँव लगाता चले और प्राप्त लाभ के अनुपात से बड़े–बड़े सौदे करता चले । पैसे की कमी हो तो किसी को भी साझी कर ले । इस तरह इतनी कमाई हो सकती है कि एक–दो महीने के भीतर ही संसार का सबसे बड़ा धन–कुबेर बना जा सके । जिसे ऐसी विद्या आती होगी वह दो–दो चार–चार रुपये फीस के लिए दूसरों को ऐसे 'चांस' क्यों बतायेगा । स्वयं ही क्यों न उस विधि का लाभ उठा लेगा । स्वयं न करता हो, फीस का ही लाभ लेता हो तो इन पंक्तियों के द्वारा हम यह घोषणा करते हैं कि सही 'चांस' बताने की गारण्टी देने वाले से दस हजार रुपया प्रति चांस लेने की पक्की शर्तबन्द लिखा–पढ़ी की जा सकती है । सच बात यह है कि ऐसा कोई भी भविष्य–वक्ता न आज तक हुआ और न होगा कि वह किसी भी सम्बन्ध में कोई निश्चित भविष्य वाणी कर सके । शुभ–अशुभ कर्मों एवं संसार की बदलती हुई परिस्थितियों के कारण भविष्य बनता–बिगड़ता और बदलता रहता है, उसका पूर्व निर्धारित और सुनिश्चित होना सर्वथा असंभव है ।

भविष्यफल और जुआ–सट्टा–इस असम्भव मृग–तृष्णा में असंख्यों लोग बुरी तरह भ्रमित रहते हैं और अपना सत्यानाश करते रहते हैं । आगरा राजामण्डी में एक ज्योतिषी रहते थे । उनने देवी की सिद्धि, जंत्र–मंत्र और ज्योतिष–ज्ञान सम्बन्धी अपनी बहुत ख्याति फैला रखी थी । जिन्हें कभी कुछ लाभ मिल जाता था वे उनकी ख्याति फैलाने और नई चिड़िया फँसाकर ज्योतिषी जी को खुश करने में लगे रहते थे । इसी जाल में बेलनगंज के दो मल्ले के व्यापारी फँस गये । एक–दो बार कुछ लाभ भी हो गया, जिससे उनका विश्वास जम गया और उनके बताने पर भरोसा करके लम्बे हाजिर तथा वायदे के सौदे करने लगे । घाटे का चक्र शुरू हुआ, भाव तेजी के स्थान पर मन्दी की ओर चले । क्षति पूर्ति के लिए ज्योतिषी की अधिक खुशामद की । उसने अधिक टण्ट–घण्ट करके अधिक सच्चा चांस बताने का वायदा किया । जो बताया, उस पर लम्बा सौदा किया । लेकिन परिणाम फिर उल्टा हो गया । हारा जुआरी अधिक जोश में बड़ा दाँव लगाता है । पर सब सौदे उलटे पड़ते गये । अन्त में ऐसी स्थिति आ गई जिसे

एक प्रकार से दिवालिया होना कहा जा सकता है । किसी प्रकार उचित, अनुचित उपाय ढूँढ़ कर वे लोग अपनी इज्जत संभाल सके । भविष्य वक्ताओं पर विश्वास करने की बात से उनने 'तोबा' की ।

जुआरी को कभी–कभी लाभ हो जाता है, उससे लालायित रह कर वह बार–बार ऐसा ही लाभ होने की कल्पना करता रहता है और दाँव लगाता रहता है । होता यह है कि जितनी बार नफा होता है उससे अधिक बार नुकसान होता है । मुफ्त की कमाई जो जुए में नफे के रूप में प्राप्त होती है, देखते–देखते फिजूल खर्चियों में उड़ जाती है, पर नुकसान ब्याज पर कर्ज लेकर या और किसी भारी तरीके से पूरा करना पड़ता है । फलस्वरूप, जुआरी अन्ततः घाटे में ही रहते हैं । उनमें से हर एक को बर्बादी का रास्ता देखना पड़ता है । तेजी–मन्दी बताना भी एक प्रकार से जुआ खेलने के लिए प्रोत्साहन देना ही है । करामाती बाबा जिस तरह सट्टा बताते हैं, इसी तरह ज्योतिषी तेजी–मन्दी बताते हैं । इस कुचक्र में जो भी फँसा उसने जुआ के व्यसन को गले में फाँसी के फन्दे की तरह डाला और अन्त में बर्बाद हो गया ।

यह मान्यताऐं सर्वथा असत्य और बेबुनियाद हैं कि इस प्रकार साधारण व्यक्ति किसी का भविष्य जानते या बता सकते हैं । जो कुछ अन्ध–विश्वास चल रहा है, वह पेशेवर लोगों द्वारा फैलाई गई मिथ्या अफवाहों के बल पर ही है । जिस प्रकार भूतवाद की जड़ यह है कि उनका व्यवसाय करने वाले ऐसी मिथ्या किंवदन्तियाँ फैलाते रहते हैं कि भूत को वहाँ यह करते देखा गया, वह करते देखा गया । वस्तुतः वे किम्बदन्तियाँ सर्वथा मिथ्या होती हैं, पर अचरज भरी होने के कारण एक से दूसरे तक नमक, मिर्च मिलाकर कही सुनी जाती रहती हैं । श्रृंखलाबद्ध रूप से उन पर रंग चढ़ाया जाता है और वे ऐसी मजेदार चटपटी कहानी बन जाती हैं कि सुनने वाले को उनसे मजा भी आता है और विश्वास भी होता है । कुछ दिन में यह किम्बदन्तियों का लोकापवाद तिल का ताड़ बन जाता है और एक बहुश्रुत, बहुचर्चित एवं बहुजन–विश्वस्त मान्यता का रूप धारण कर लेता है । भूतवाद का एक

पक्का कलेवर बनकर खड़ा हो जाता है । ठीक इसी प्रकार अमुक भविष्यवक्ता ने अमुक का यह भविष्य बताया था और वह ठीक निकला, इस प्रकार की किम्बदन्तियों के पीछे ९० प्रतिशत असत्य जानबूझ कर फैलाई गई अफवाहों के रूप में होता है । लोग उनकी तलाश नहीं करते, यदि तलाश करें तो सहज ही पता चल जाय कि जिस व्यक्ति के बारे में जो कुछ कहा गया था तो उस नाम का उस जगह कोई आदमी ही नहीं है, यदि है तो उसे उस तरह का कोई लाभ नहीं हुआ । केवल मनगढ़न्त कहानी एक अफवाह के रूप में फैलादी गई ताकि दूसरे भोले लोग उस उदाहरण से प्रभावित होकर उस जाल में फँसने को चले आवें । दश–प्रतिशत जो घटनायें सही होती हैं, उनके पीछे संयोग मात्र ही कारण होता है । जिस प्रकार झाड़–फूँक करने वाले हर मरीज को कुछ न कुछ धूल–भभूत देते रहते हैं और सौ के पीछे दस–बीस को कुछ फायदा होता रहता है, उसी प्रकार भविष्य वक्ताओं की उल्टी–सीधी बातों में से भी दस–पाँच फीसदी की तुक बैठ जाती हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है । संयोग–वश बहुत–सी बातें इस संसार में अप्रत्याशित रूप से भी होती रहती हैं । सौ विद्यार्थियों को पास या फेल होने को कहा जाय तो पचास फीसदी बात सच निकल ही आवेगी । लड़की होगी या लड़का इस प्रश्न के उत्तर में यदि सौ गर्भवती स्त्रियों को एक ही बात कही जाती रहे तो आधे लोगों के बारे में कही गई भविष्यवाणी सच निकल ही आवेगी । इसमें आश्चर्य की बात क्या है ? सट्टा बताने वाले और भविष्य कहने वाले यदि सामान्य बुद्धि से काम लें और उनकी अधिकतर भविष्यवाणियाँ यदि सही बैठ जायें तो उसमें कुछ भी अचम्भे की बात नहीं । ऐसा तो कोई बिना ज्योतिष जानने वाला भी करता रह सकता है और कुछ न कुछ तुक बैठते रहने से उसका भी धन्धा चलता रह सकता है ।

अफवाहें और भ्रान्तियाँ–इस प्रकार के अन्ध–विश्वासों का प्रचलन किसी समाज के बौद्धिक स्तर की हीनता का ही परिचय देता है । भ्रान्तियों के द्वारा होने वाली वे भौतिक हानियाँ तो प्रत्यक्ष ही हैं जिन्हें उस जंजाल में फँसे हुए लोग आये दिन उठाते रहते हैं । उनके

अतिरिक्त सबसे बड़ी हानि मानसिक स्तर के गिरने एवं विवेक कुण्ठित होने की है । विवेक का परित्याग कर फैली हुई बेसिर-पैर की अफवाहों का जो निराकरण एवं निरूपण नहीं कर सकता, वह अनेक अवसरों पर धोखा खाता है । इस संसार में ठग और धोखेबाजों की कमी नहीं है । वे किसी भी बहाने, किसी भी भोले व्यक्ति को ठगते-फँसाते रहते हैं । ये ठगे जाने वाले व्यक्ति इसी श्रेणी के होते हैं जो हर किसी की हर बात पर भरोसा कर बैठते हैं और अन्त में पत्थर से मारे जाते हैं । मनुष्य को भगवान ने बुद्धि दी है, तो उसका उपयोग पेट पालने मात्र में करते रहना ही पर्याप्त नहीं वरन् उसे इस काम में भी प्रयुक्त किया जाना चाहिए कि जो भ्रम-जंजाल मकड़ी के जाले की तरह अपने चारों ओर फैला हुआ है, उनमें से कितना उपयोगी एवं ग्राह्य है उसे ग्रहण करें और कितना ऐसा है जिसे मकड़ी के जाले एवं दुर्गन्धयुक्त कूड़े-कबाड़े की तरह है उसे तुरन्त झाड़-बुहार कर बाहर फेंक दिया जाय । ऐसी विवेक बुद्धि यदि मनुष्य में जागृत न हो सके तो यही कहना चाहिए कि मानसिक दृष्टि से उसका स्तर गये-गुजरे लोगों जैसा ही है ।

ऐसे लोग जहाँ भी अधिक होंगे वहाँ ठगने वाले और ठगाने वालों की संख्या बढ़ती चली जायेगी और उसका परिणाम व्यक्ति और समाज के लिए दुःखदायी एवं अधोगति उत्पन्न होने का निमित्त ही बनेगा । बौद्धिक प्रखरता उत्पन्न हुए बिना न तो कोई व्यक्ति ऊँचा उठ सकता है और न राष्ट्र की प्रगति कर सकता है । इसलिए यदि हम नव-निर्माण की बात सोचते हैं तो यह भी जानना चाहिए कि यह प्रयोजन बौद्धिक प्रखरता विचारशीलता उत्पन्न करने से ही सम्भव होगा । अन्ध-विश्वासी मूढ़तावादी एवं रूढ़ि-परायण बने रहने में पग-पग पर खतरा है । प्रगति के मार्ग में लगने वाली क्षमताऐं उसी खतरनाक गड्ढे में गिरकर नष्ट होती रहेंगी तो फिर प्रगति का प्रयोजन सिद्ध करने के लिए मानसिक एवं बौद्धिक क्षमता बच ही कहाँ से रहेगी ?

भोलेपन का शोषण-एक व्यक्ति को किसी भविष्यवक्ता ने बताया

कि उसकी मृत्यु आज से दो वर्ष बाद हो जायेगी । बेचारे ने वह बात सच मान ली । जो कुछ पैसा था तीर्थयात्रा, ब्रह्मभोज आदि में खर्च कर दिया । जमीन जायदाद थी उसका बँटवारा और वसीयत कर दी । काम–धन्धा बन्द कर दिया । लगभग पूरी तरह खाली हाथ हो गया । नियत समय पर मौत की परीक्षा करता रहा, पर वह आई ही नहीं । इसके बाद वह दस वर्ष और जिया, इतने दिन। असहाय–अनाथ जैसी जिन्दगी उसे गुजारनी पड़ी । सब लोग उसका मजाक बनाते रहे और मूर्ख बनाते रहे । उसे हर किसी के सामने लज्जित और सहमा जैसा रहना पड़ता था ।

एक करामाती बाबा सट्टा बताने का धन्धा करते थे । एक भक्त को उनने कई बार नम्बर बताया पर वह बार–बार गलत निकलता गया । इस पर क्रुद्ध होकर उस भक्त ने रात को आकर बाबाजी को धर दबाया और उसकी दुर्गति करने लगा । बाबा बुरी तरह घबराया और उसकी क्षति–पूर्ति करने का वायदा कर अपने प्राण की भिक्षा माँगने लगा । भक्त ने कहा कल जो सट्टा आवे उसका नम्बर बता दीजिए तो मेरी क्षति–पूर्ति हो जायगी । बाबा ने स्वीकार किया कि उसे कुछ भी नहीं आता । वह यों ही प्रपंच रचकर लोगों को बहकाने और अपना उल्लू सीधा करने का धन्धा मात्र करता है । अन्त में बाबा ने पास में जो ६००) रुपये के करीब थे वे नकद दिये और क्षति–पूर्ति में जो २००) रुपये कम थे वे एक महीने के अन्दर चुकाने का वायदा किया । इस प्रकार बाबा के प्राण बचे । कुछ समय बाद बाबा वहाँ से चला गया और अन्यत्र नई जगह अड्डा जा जमाया । ऐसे लोग करते भी आम तौर से यही हैं । जब एक जगह के लोगों के सामने पोल खुल जाती है तो दूसरी जगह जाकर अपना डेरा जमाते हैं और वहाँ भी जब अश्रद्धा फैलती है तब अन्यत्र चले जाने का उपक्रम करते रहते हैं ।

श्रद्धा बहुत ही उपयोगी एवं आवश्यक वस्तु है । उसी आधार पर आत्मिक प्रगति होती है । जो अश्रद्धालु है उसे एक प्रकार का भावनात्मक नास्तिक ही कहना चाहिए । अतएव हर व्यक्ति को श्रद्धालु बनना चाहिए और सन्मार्ग पर चलते हुए जो कष्ट आते हैं उन्हें

इस श्रद्धारूपी सम्बल के सहारे ही सहन करना चाहिए । श्रद्धा की उपयोगिता अत्यधिक है, उसका जितना विकास, विस्तार हो उतना ही उत्तम है । अब यह स्मरण रखने की बात है कि विवेक पूर्ण श्रद्धा के स्थान पर अविवेक पर आधारित अन्ध–श्रद्धा हमारे पल्ले में न बँध जाय । अहिंसा और कायरता बाहर से एक–सी लगती है पर उनके आदर्श एवं अन्तरिक स्वरूप में जमीन–आसमान जितना अन्तर होता है । ठीक इसी प्रकार अन्ध–विश्वास भी प्रशंसित श्रद्धा जैसी ही प्रतीत होती है, पर उसकी पृष्ठभूमि एवं प्रतिक्रिया एक–दूसरे से सर्वथा भिन्न है । भिन्न ही क्यों उसे विपरीत ही कहना चाहिए । यही कारण है कि श्रद्धा जहाँ मनुष्य के आध्यात्मिक उल्लास एवं लौकिक विकास का पथ प्रशस्त करती है वहाँ अन्ध–श्रद्धा अनाचार उत्पन्न करती है और उस भोले व्यक्ति की हर प्रकार दुर्गति कराने का कारण बनती है । इसलिए मनीषियों ने यही उपदेश दिया है कि मनुष्य को श्रद्धालु तो होना चाहिए पर अन्ध–श्रद्धालु कदापि नहीं । किसी बात पर श्रद्धा करने से पूर्व उसकी वास्तविकता को गहराई से परखा जाना चाहिए । जो उचित, सत्य और विवेक संगत हो उसे ही स्वीकार करना चाहिए ।

कानून की पकड़ में आने वाली ठगी–ठगी के जितने भी तरीके देखने–सुनने में आते हैं, उनमें से आधे से ज्यादा अन्ध–श्रद्धा पर आधारित होते हैं । भारतवर्ष में से यदि अन्ध–श्रद्धा की मानसिक हीनता एवं रुग्णता हट जाय तो ठगी के आधे से अधिक अपराध समाप्त हो जायेंगे । ठगी इस देश का सबसे बड़ा अपराधी उद्योग है । इस धन्धे में इतने अधिक लोग लगे हुए हैं जितने शायद ही किसी उद्योग में संलग्न हों । कुछ तरह की ठगियाँ गैर कानूनी होती हैं । उन्हें करने वाले पुलिस द्वारा पकड़े जाते हैं और उन पर मुकदमा चलाकर जेल पहुँचाये जाते हैं । कुछ तरह की ठगी इससे भिन्न हैं, जो कानूनी कही जाती हैं । उन्हें करने वाले न तो पुलिस द्वारा पकड़े जाते हैं और न उन पर कोई मुकदमा चलता है, जेल जाने की नौबत भी उनकी नहीं आती । वरन् सच तो यह है कि यह लोग देवताओं जैसा सम्मान पाते हैं और प्रचुर धन कमाकर सहज ही मालामाल बन जाते हैं । अन्ध–श्रद्धा का व्यवसाय अपना कर

ही यह सब किया जाता है । भारत की अशिक्षित–अविवेकी भोली जनता इनके चंगुल में फँसती रहती है और अपना नैतिक, मानसिक एंव आर्थिक सर्वनाश कराती रहती है । धर्म की आड़ में, देवताओं की आड़ में, भूत–पलीतों की आड़ में, ज्योतिष–भविष्यवाणी की आड़ में जो कुछ होता है, उनमें से अधिकांश इतना जघन्य है कि उसका नग्न स्वरूप यदि किसी को देखने के लिए मिले तो तिलमिलाये बिना न रहेगा । मुफ्तखोर लोग भोले लोगों को बड़ी–बड़ी आशायें बँधाते हैं, उन्हें कल्पना लोक में उड़ाते हैं, सब्जबाग दिखाते हैं और जब वह भावान्वित हो जाता है तब उनके पास से जो कुछ लूटने को मिलता है सब कुछ ठग ले जाते हैं । मनोकामनायें पूर्ण करने की इच्छा का सस्ता नुस्खा इनके पास सुना जाता है, इसलिए भोले लोग कठिन श्रम–साध्य–मार्ग अपना कर पुरुषार्थ द्वारा क्रमिक प्रगति करने से कतराते हैं, वे इस 'शार्टकट' (शीघ्र मार्ग) की ओर मुड़ पड़ते हैं । वे नहीं जानते कि जितने भी शॉर्टकट–सस्ते नुस्खे हैं उन सबके पीछे केवल छल की विडम्बना ही भरी रहती है । इस संसार में अनेक तरह की सिद्धियाँ, विभूतियाँ एवं सफलतायें लोगों ने प्राप्त की हैं, छोटी स्थिति से बढ़कर महान् बने हैं, मनोकामनाऐं भी पूर्ण की हैं, पर यह सब सम्भव तभी हुआ है, जब उनके लिए आवश्यक श्रम किया गया है, आवश्यक क्षमता, योग्यता एवं विशेषता प्राप्त की गई है । जो लोग अपने गुण, कर्म, स्वभाव में अपनी भावी महत्वाकांक्षाओं के अनुसार सुधार करने का एवं उन सफलताओं के अनुसार श्रम, साहस, धैर्य, एवं पुरुषार्थ का परिचय देने का राजमार्ग नहीं अपनाना चाहते उन्हें ही सस्ता शार्टकट ढूँढ़ने की लपक रहती है । यदि शार्टकट का तरीका सम्भव रहा होता तो हर किसी ने उसे ही अपनाया होता और कोई भी कठिनाइयों का मार्ग अपना कर धैर्यपूर्वक क्रमिक विकास करने एवं प्रगति का मार्ग ढूँढ़ने का प्रयत्न न करता । तब तो चुटकी बजाते मंत्र–तंत्रों, देवी–देवताओं, सिद्ध–करामातियों की सहायता से लोग बात की बात में मनोवाञ्छायें पूरी कर लिया करते । ईश्वर की सृष्टि में ऐसा विधान है नहीं । यहाँ पुरुषार्थ का राजमार्ग ही एक मात्र मार्ग है । वह सब के लिये खुला है ,उसी पर चलकर अब तक के सफल मनोरथ व्यक्ति समुन्नत परिस्थितियाँ प्राप्त कर सकने में सफल हुए हैं और आगे भी केवल मात्र वे

ही सफल होंगे जो प्रयत्न एवं पुरुषार्थ का राजमार्ग अपना कर अपनी प्रयत्नशीलता एवं तपश्चर्या की अग्नि–परीक्षा में होकर गुजरने का साहस करेंगे।

सस्ते नुस्खे ढूँढ़ने वाले बेचारे–सस्ते नुस्खे खोजना मनुष्य की आन्तरिक हीनता, दुर्बलता एवं कायरता का चिन्ह है। अपने देश में ऐसे ही लोगों की भरमार पाई जाती है। श्रीसूक्त का पाठ करके लक्ष्मी बटोरने का सपना देखने वाले, हनुमान चालीसा पढ़कर मुकदमा जीतने की आश लगाने वाले, भैरोंजी का दीपक जलाकर रोग दूर होने की आकांक्षा करने वाले, हरवंश पुराण की कथा सुनते ही पुत्र उत्पन्न होने की कामना करने वाले और अमुक बाबा का आशीर्वाद मिलने पर नौकरी में तरक्की हो जाने की उम्मीद किए बैठे रहने वाले लोगों की संख्या इतनी अधिक है कि धार्मिकता और पूजा–पाठ के नाम पर मची हुई सारी धमा–चौकड़ी इसी आधार पर कागज के महल की तरह खड़ी दिखाई देती है। लगता है अभी भी इस देश में आध्यात्मिकता और धार्मिकता का वातावरण मौजूद है, पर यदि ऐसा सचमुच ही रहा होता तो इससे अधिक प्रसन्नता और सौभाग्य की बात हमारे लिए और क्या हो सकती थी। पर यह तो उससे मिलती–जुलती एक बिल्कुल ही दूसरे किस्म की चीज है। हीरा और काँच की शकल ही एक समान होती है, उनके मूल्य में तो जमीन आसमान जितना अन्तर रहता है। ठीक यही अन्तर इस सस्ते मोल में मनमानी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने की मान्यता पर टिकी हुई पूजा–पत्री और वास्तविक आध्यात्मिकता में होता है। आध्यात्मिकता का अनुयायी श्रमशील, पुरुषार्थी, व्यवस्थित, धैर्यवान और साहसी होता है वह उचित मार्ग का अवलम्बन कर प्रगति के लिए भरपूर प्रयत्न करता है। फल के लिए लालायित नहीं होता, अपने कर्तव्य पालन को ही सफलता मान लेता है और उसी से परिपूर्ण सन्तोष अनुभव करता है। यह कर्तव्य पालन करते हुए जो भौतिक लाभ मिल जाता है, वह तो उसे मुफ्त का उपहार समझकर दुहरी प्रसन्नता अनुभव कर लेता है। सफलता न मिली तो गम नहीं। एक बार सफलता न मिली तो अगली बार मिलेगी और न भी मिली तो कुछ

चिन्ता की बात नहीं, जो श्रम, साहस एवं कर्तव्य पालन किया उसका आनन्द भी क्या कम महत्व का है । उससे अपनी क्षमता एवं प्रतिभा के विकास एवं कई तरह के कड़ुए–मीठे अनुभव प्राप्त करने का सुअवसर मिल जाता है । आत्मोत्कर्ष की दृष्टि से उसका भी महत्व कम नहीं है । गीता की यही शिक्षा है । यह कर्म का दर्शन और अध्यात्म का सार है, जिसे यह आता है वह जीवन का लक्ष्य और कार्य–क्रम निर्धारित करता है और उसी दिशा में सुनिश्चित गति से, स्थिर चित्त से बढ़ता चला जाता है । न उसे हानि विचलित करती है और न लाभ की तृष्णा से उद्विग्नता ही बढ़ती है ।

बिना परिश्रम विपुल लाभ की तृष्णा–जिन्हें लाभ की लालसा तो बढ़ी–चढ़ी है, पर अपनी योग्यता, सामर्थ्य, श्रमशीलता आदि को बढ़ाना नहीं चाहते उन्हें क्या कहा जाय ? बिना प्रयास या स्वल्प प्रयास से बढ़े–चढ़े लाभ प्राप्त करने वाले और उसके लिए सस्ते उपाय ढूँढ़ने वाले लोग वस्तुतः अधीर, अव्यवस्थित एवं अविकसित स्तर के लोग ही माने जाते हैं । स्वल्प प्रयास में अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य की तुलना में बहुत अधिक चाहने वाले लोग ही सस्ते नुस्खे, शार्टकट ढूँढ़ते फिरते हैं । अन्धेरे में टटोलते हुए वे एक परीक्षण पूजा–पत्री का भी करते रहते हैं । दो–चार पैसे फूल–पत्ते देव मूर्तियों को चढ़ाकर, किसी देवी–भवानी के दर्शन कर, किसी सिद्ध महात्मा को माला, मिठाई देकर, किसी मंत्र–तंत्र की दस–पाँच दिन तक टण्ट–घण्ट करके वे विपुल सम्पदा के स्वामी बनना चाहते हैं । ऐसे लालची अधीर और गये–गुजरे लोग सच्चे मन से न कोई पूजा कर पाते हैं, न भक्ति–भावना । उन्हें जल्दी–जल्दी लूट का माल उड़ाने की और क्षमता की तुलना से अत्यधिक फल पाने की लालसा परेशान करती रहती है । इसी की तृप्ति के लिए वे पूजा–उपासना का बाना कुछ दिन पहनते हैं और जब अभीष्ट फल मिलता नहीं दीखता तो उसे छोड़ ही नहीं बैठते वरन् देवता, पूजा, मन्त्र, गुरु आदि की भरपूर निन्दा भी करते हैं ।

उपासना का प्रचलित स्वरूप विशुद्ध रूप से अन्ध–विश्वास मात्र है । उससे किसी का कोई लाभ नहीं हो सकता । उपासना एवं

आध्यात्मिकता का परिणाम मनुष्य की अन्तरात्मा पर चढ़े हुए मल–आवरण विक्षेपों का समाधान, कर्तव्यपरायणता, धैर्य, साहस, विवेक, श्रमशीलता, व्यवस्था आदि सद्गुणों का अभिवर्धन ही हो सकती है । उससे मनुष्य का व्यक्तित्व निखरता है । दृष्टिकोण उदार, विशाल एवं परिमार्जित होता है । यह लाभ इतने बड़े हैं जिनके आधार पर मानव–जीवन का लक्ष्य प्राप्त होता है और साधारण जीवन महापुरुषों जैसा बनाकर सच्ची सुख–शान्ति का पथ प्रशस्त करता है । पर हम देखते हैं कि इस ओर लोगों की तनिक भी रुचि नहीं है । जो कर्म पुरुषार्थ से न बन पड़े उसे देवता द्वारा करा लेना ही पूजा का प्रयोजन बन गया है । इस प्रकार का हेय दृष्टिकोण किसी सच्चे अध्यात्मवादी का नहीं वरन् गये–गुजरे लालची का ही हो सकता है ।

पूजा, उपासना, धार्मिकता, आध्यात्मिकता सभी अच्छी हैं । इन सब के लाभ भी असीम हैं, पर वे होनी चाहिए उचित आधार और उचित माध्यम को लेकर । देवताओं जैसा दिव्य जीवन बनाने की कामना से देव पूजा, ईश्वरीय सत्प्रवृत्तियों और सद्भावनाओं का स्रोत अन्तःकरण से प्रवाहित करने के लिए ईश्वरीय उपासना, साहस–धैर्य–संयम–श्रमशीलता जैसी विभूतियों को उपलब्ध करने के लिए गुरुभक्ति, विवेक–दूरदर्शिता एवं नीर–क्षीर विवेक प्राप्ति के लिए कथा–सत्संग का श्रवण पारायण, समाज को सुसंस्कृत–सद्गुणी एवं सुविकसित करने का प्रयोजन पूर्ण करने के लिए दान–पुण्य श्रेष्ठ पुरुषों से सम्पर्क स्थापित करके व्यक्तित्व को समुन्नत करने वाली प्रेरणा प्राप्त करने के लिए तीर्थयात्रा करनी चाहिए । इन सदुद्देश्यों की पूर्ति के लिए जो भी आध्यात्मिक प्रक्रिया अपनाई जायगी, सार्थक होगी । उसके सत्परिणामों को पाकर मनुष्य धन्य हो जायगा । पर जिसका प्रयोजन लूट के माल की तरह देवताओं का वरदान प्राप्त करके अपने भौतिक जीवन की उन कमियों को पूरा करना मात्र है जो आवश्यक योग्यता, प्रतिभा एवं श्रमशीलता के मूल्य में मिलती हैं–एक प्रकार से अनधिकार चेष्टा करना है । हम देखते हैं कि कर्तव्य–निष्ठा, धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता के मूल में आज लोगों में अनधिकार चेष्टा और असीम कामनायें ही

कोलाहल कर रही हैं । इसे विडम्बना ही कहना चाहिए । अच्छा हो हम विडम्बना छोड़ें वस्तु–स्थिति समझें और वह सोचें जो सोचने योग्य है, वह करें जो करने योग्य है ।

हमें हर वस्तु की, हर बात की वास्तविकता परखनी चाहिए । देखना चाहिए कि कहाँ, क्या तथ्य है । जो तथ्य हो उसे स्वीकार करना चाहिए । किम्बदन्ती के रूप में प्रचलित अधिकांश बातें ऐसी हैं जिन पर बिना समझे–बूझे विश्वास कर लिया जाय तो उसमें लाभ की कम और हानि की अधिक आशंका रहेगी । जिस समाज में अशिक्षितों की संख्या अधिक होती है, जिनमें मनचले लोग अनेक तरह की अफवाहें बनाते और उड़ाते रहते हैं वहाँ भ्रमित होते देर नहीं लगती । भोले लोगों का मस्तिष्क कुछ ऐसा विलक्षण होता है कि बुद्धिमत्ता की, हित की, वास्तविकता की बात कही जाय तो उस पर शायद ही विश्वास करें क्योंकि वह सीधी, स्वाभाविक और कुछ कठिनाइयों से भरे स्वभावों की होती है, पर वे ऐसी बातों पर सहज ही भरोसा कर लेते हैं, जिनमें जादू, चमत्कार, कौतूहल का पुट रहता है और कम समय तथा कम खर्च से अधिक लाभ मिलने की बात कही जाती है । अपने इसी भोले स्वभाव के कारण अशिक्षित अथवा भावुक लोग अनावश्यक जंजालों में फँस जाते हैं और अपनी शक्ति सामर्थ्य की खेद–जनक बर्बादी करते रहते हैं ।

अन्ध–विश्वास से दूर रहिए

इसमें सन्देह नहीं कि अन्ध–विश्वास की शक्ति भी बड़ी विलक्षण है और सावधान न रहा जाय तो अच्छे पढ़े–लिखे व्यक्ति भी उसके फन्दे में फँस जाते हैं । हमारा देश तो अभी तक इसका घर बना ही हुआ है, पर योरोप और अमरीका के वैज्ञानिक प्रगति वाले देश भी इससे अछूते नहीं है ।

पर भारत की भी यह दशा सदा से नहीं है । एक समय वह भी था, जब संसार में सबसे पहले यहाँ दार्शनिक ज्ञान का प्रकाश हुआ था । यहाँ के विद्वानों ने सांख्य और वैशेषिक जैसे सिद्धान्त ढूँढ़ कर निकाले थे, जिनसे सृष्टि और परमात्मा के मूल स्वरूप का भी स्पष्ट रूप से पता लगा लिया गया था । यहीं पर छै वेदान्त–सिद्धान्त का सूर्योदय

हुआ जिसके समीप आधुनिक विज्ञान अब पहुँच रहा है । यहाँ के विद्वानों ने ब्रह्म और जीव की एकता पर बड़े–बड़े ग्रन्थ लिख डाले । फिर भी खेद है कि भूत–पलीत, टोना–टोटका, स्याने–ओझा आदि का जितना व्यापक जंजाल इस देश में पाया जाता है उतना अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं देता । हमें यह कहने में कुछ भी संकोच नहीं कि इन दिनों भारतीय जनता का एक बड़ा भाग सच्चे धर्म को भुला बैठा है और उसने अन्धविश्वास को ही अपना 'धर्म' बना लिया है ।

इस अन्धविश्वास का परिणाम घातक होता है । इसके लिए एक छोटा–सा उदाहरण 'नजर लगने' का ही पर्याप्त है । यहाँ के अशिक्षित स्त्री–पुरुष और खास कर ग्रामीण लोग छोटे बच्चे को किसी तरह की तकलीफ होते ही उसका कारण नजर लग जाना या किसी प्रकार का टोना–टोटका समझ लेते हैं । इसलिए वे रोग का उचित इलाज कराने की बजाय ओझाओं अथवा सयानों के पास ही पहुँच जाते हैं । वहाँ पर उसको झाड़–फूँक करके फूल, बताशा और पैसा आदि से भरा एक दोना चौराहे पर रखवा दिया जाता है । ओझा कहता है कि जो व्यक्ति इस 'उठावा' को लेगा, उसी के ऊपर बच्चे की बीमारी चली जायगी । ऐसी ही मन–गढ़न्त बातों पर विश्वास करके माँ–बाप बच्चे का उचित इलाज करने पर ध्यान नहीं देते । परिणाम यह होता है कि बीमारी बढ़ जाती है और बच्चा असमय में ही चल बसता है ।

यहाँ पर ऐसे मूर्खों की भी कमी नहीं है जो रामायण में रावण के सिर काट कर महादेव पर चढ़ाने की कथा पढ़कर अपना सिर भी काट डालते हैं । किसी ने एक कहानी–किस्सा की पुस्तक में पढ़ा कि चन्द कवि ने अपनी जिह्वा काट कर देवी पर चढ़ा दी थी, जिससे उसे सरस्वती सिद्ध हो गई और वह महान कवि बन गया । बस उसने भी कानपुर की तपेश्वरी देवी के मन्दिर में पहुँचकर अपनी जीभ काट कर देवी पर चढ़ा दी, पर कवि होना तो दूर उसका साधारण बोलना– चालना भी बन्द हो गया और दो–चार दिन बाद मर गया । एक तीसरे भाई ने पढ़ लिया कि 'रामायण' के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास शौच से बचा हुआ जल एक पेड़ की जड़ में डाल दिया करते थे, जिससे किसी प्रेत ने प्रसन्न होकर उनको

मनोकामना पूर्ति का मार्ग बता दिया । तब उसने भी यही प्रक्रिया शुरू कर दी । महीनों बीत जाने पर भी लाभ तो कुछ नहीं हुआ, पर पानी बचाने की धुन में शौच के पश्चात् ठीक प्रकार स्वच्छता करने में कमी पड़ गई ।

इस प्रकार की सैकड़ों मूढ़ताऐं इस देश की जनता में फैली हुई हैं, जिनसे व्यक्ति और समाज की बहुत कुछ हानि होती रहती है । पर अन्ध–श्रद्धा के नाम पर कोई उनके प्रतिकार का कुछ उपाय नहीं करता । उदाहरणार्थ हिन्दू लोग हनुमान जी की आकृति का होने से बन्दरों को और गणेश जी का वाहन समझकर चूहों को मारना बहुत बड़ा पाप समझते हैं । इतना ही नहीं हजारों व्यक्ति तो बन्दरों को बुला–बुलाकर रोटी, चना तथा अन्य खाद्य पदार्थ देते हैं, पर बदले में बन्दर लोगों के कपड़े, जूते, बर्तन आदि उठाकर ले जाते हैं, बच्चों को काट लेते हैं और अनेक बार तो छतों पर से ईंट, पत्थर गिरा कर प्राण हानि भी कर देते हैं । चूहे भी खेतों, गोदामों और घरों में से हजारों, लाखों मन अनाजखा डालते हैं जिससे मनुष्यों को उसकी कमी पड़ जाती है, पर अन्ध– विश्वास के कारण इस तरह की हानि का प्रतिकार करने का कोई कारगर प्रयत्न नहीं किया जाता ।

आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य में नीर–क्षीर विवेचन कर सकने की विवेक बुद्धि जागृत हो और वह वास्तविकता और सचाई को परखना सीखे । यह कुछ कठिन भी नहीं है । भोजन बनाना कठिन हो सकता है, पर उसका स्वाद चखकर यह बताना सरल है कि वह ठीक बना या नहीं । रोगी और निरोग, कुरूप और सुन्दर की परख कर सकना कुछ कठिन नहीं है । यदि थोड़ी विवेक–बुद्धि का उपयोग किया जाय और गहराई तक घुसने का प्रयत्न किया जाय तो वास्तविकता और अवास्तविकता का अन्तर सहज ही समझ में आ जाता है । हमें यह परख करनी चाहिए और इतना साहस एकत्रित करना चाहिए कि जो कुछ लोगों द्वारा कहा, बताया या माना जा रहा है, वह यदि ठीक न जँचे तो हिम्मत के साथ उसे अस्वीकार कर दें ।

श्रद्धा बड़ी उत्तम वस्तु है, उसमें बल भी बहुत होता है । श्रद्धा के बल पर लोग धर्म अध्यात्म एवं ईश्वर प्राप्ति की उच्च कक्षा तक जा

पहुँचते हैं, पर वह होनी चाहिए विवेक–सम्मत । तर्क–बुद्धि की कसौटी पर कसकर आवश्यक प्रमाणों की सहायता से पूरी छान–बीन के साथ जो बात स्वीकार की गई है, उसी में दृढ़ता रहनी चाहिए और दृढ़ श्रद्धा ही किसी प्रयोजन को पूर्ण करती है । अन्ध–श्रद्धालु अपनी मान्यताओं के प्रति शंकाशील बने रहते हैं और जब कभी कोई राई–रत्ती व्याघात उपस्थित होता है, तो पूर्व मान्यता को छोड़ते हुए भी देर नहीं करते । अन्ध–श्रद्धा हमेशा अधूरी रहती है । चूँकि उसे सचाई की कसौटी पर कसा नहीं गया है इसलिए उसका आधार हमेशा थरथराता रहता है ।

देखा जाता है कि अनेक देवताओं को पूजने वाले वस्तुतः किसी पर भी विश्वास नहीं करते, अनेक मंत्रों को जपने वाले थोड़ी–थोड़ी सब की बानगी लेते हैं । दृढ़ता तो किसी बात में तभी उत्पन्न होती है, जब किसी बात को गहराई तक समझ लिया गया हो और उसे भलीभाँति परख लिया गया हो । यह दृढ़ता जब तक श्रद्धा के साथ सम्मिलित न हो तब तक वह अन्ध–श्रद्धा ही कहलाती रहेगी और उसकी अस्थिरता भी बनी ही रहेगी । अन्ध–श्रद्धा ने हमें इस स्थिति पर पहुँचा दिया है कि कोई भी "ऐरा–गैरा–नत्थू–खैरा" कोई भी आडम्बर रचकर हमें ठग सके । इस स्थिति का अन्त होना ही चाहिए । हमारी विवेकशीलता को जागृत होना ही चाहिए ।

◉

मुद्रक: युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा